श्रद्धांजलि

अपनी आवाज की कशिश से आठ दशक तक बनाया दीवाना

बॉलीवुड कीलेजेंड्री सिंगर आशा भोसले ने 92 की उम्र में हमेशा के लिए अपनी आंखें मूंद ली हैं. वो अपने पीछे एक लंबी विरासत छोड़ गई हैं. उनके साथ जैसे सुरों का एक पूरा युग खामोश हो गया. वो आवाज, जिसने दशकों तक हर एहसास को शब्द दिए- चाहे वो प्यार हो, दर्द हो, शरारत हो या जश्न, आज हमेशा के लिए थम गई है. हिंदी सिनेमा के अनगिनत गानों में बस चुकी आशा भोसले की आवाज सिर्फ एक गायकी नहीं, बल्कि करोड़ों दिलों की धड़कन थी. 12 अप्रैल को खबर आई कि दिग्गज सिंगर ने इस दुनिया को अलविदा कह दिया है. पद्म विभूषण और दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित पार्श्वगायिका भोसले 50, 60 और 70 के दशक के बॉलीवुड के संगीत के सुनहरे दौर की आखिरी जीवित हस्ती थीं. इस दौर में लता मंगेशकर, मोहम्मद रफ़ी, किशोर कुमार, मुकेश, मन्ना डे और खुद भोसले जैसी हस्तियां शामिल थीं. वह अपनी सुरीली आवाज़ और बहुमुखी प्रतिभा के लिए मशहूर थीं. उन्होंने फ़िल्मी संगीत, पॉप, ग़ज़ल, भजन, पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकगीत, क़व्वाली और रवींद्र संगीत जैसे कई अलग-अलग तरह के संगीत में अपनी कला का प्रदर्शन किया. उन्होंने 20 से ज़्यादा भारतीय और विदेशी भाषाओं में गाने गाए हैं.

भारतीय सिनेमा जगत में आशा भोसले को ऐसी पार्श्वगायिका के तौर पर याद किया जायेगा, जिन्होंने अपनी आवाज की कशिश से लगभग आठ दशक तक श्रोताओं को अपना दीवाना बनाये रखा. महाराष्ट्र के सांगली गांव में 08 सितम्बर 1933 को जन्मी आशा भोसले के पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर मराठी रंगमंच से जुडे हुए थे. नौ वर्ष की छोटी उम्र में ही आशा भोसले के सिर से पिता का साया उठ गया और परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी को उठाते हुए आशा भोसले और उनकी दीदी लता मंगेशकर ने फिल्मों में अभिनय के साथ-साथ गाना भी शुरू कर दिया.

आशा भोसले ने अपना पहला गीत वर्ष 1948 में ..सावन आया ..फिल्म चुनरिया में गाया. सोलह वर्ष की उम्र में अपने परिवार की इच्छा के विरूद्ध जाते हुये आशा भोसले ने अपनी उम्र से काफी बड़े गणपत राव भोसले से शादी कर ली. उनकी वह शादी ज्यादा सफल नही रही और अंतत: उन्हें मुंबई से वापस अपने घर पुणे आना पड़ा. उस समय तक गीतादत्त, शमशाद बेगम और लता मंगेश्कर फिल्मों में बतौर पार्श्वगायिका अपनी धाक जमा चुकी थी.

शास्त्रीय संगीत से लेकर पाश्चात्य धुनों पर गाने में महारत हासिल करने वाली आशा भोसले ने वर्ष 1981 में प्रदर्शित फिल्म उमराव जान से अपने गाने के अंदाज में परिवर्तन किया. फिल्म उमराव जान से आशा भोसले एक कैबरे सिंगर और पॉप सिंगर की छवि से बाहर निकली और लोगों को यह अहसास हुआ कि वह हर तरह के गीत गाने मे सक्षम है.

उमराव जान के लिये आशा भोसले ने ..दिल चीज क्या है.. और ..इन आंखों की मस्ती के.. जैसी गजलें गाकर उन्हें खुद भी आश्चर्य हुआ कि वह इस तरह के गीत गा सकती हैं. इस फिल्म के लिये उन्हें अपने करियर का पहला नेशनल अवार्ड भी मिला. वर्ष 1994 में अपने पति आर डी बर्मन की मौत से आशा भोसले को गहरा सदमा लगा और उन्होंने गायिकी से मुंह मोड़ लिया,लेकिन उनकी जादुई आवाज आखिर दुनिया से कब तक मुंह मोड़े रहती. उनकी आवाज की आवश्यकता हर संगीतकार को थी. कुछ महीनों की खामोशी के बाद इसकी पहल की संगीतकार ए.आर.रहमान ने.

रहमान को अपनी रंगीला फिल्म के लिये आशा भोसले की आवाज की जरूरत थी. उन्होंने 1995 में ..तन्हा तन्हा .. गीत फिल्म रंगीला के लिये गाया. आशा भोसले के सिने करियर मे यह एक बार फिर महत्वपूर्ण मोड़ आया और उसके बाद उन्होंने आजकल की धूम धड़ाके से भरे संगीत की दुनिया में कदम रख दिया.

आज रिमिक्स गीतों के दौर में बनाये गये गानों पर यदि एक नजर डाले तो पायेंगे कि उनमें से अधिकांश नगमें आशा भोंसले ने ही गाये थे. इन रिमिक्स गानों में पान खाये सइयां हमार, पर्दे में रहने दो, जब चली ठंडी हवा, शहरी बाबू दिल लहरी बाबू, झुमका गिरा रे बरेली के बाजार में, काली घटा छाये मोरा जिया घबराये, लोगों न मारो इसे, कह दूं तुम्हें या चुप रहूं और मेरी बेरी के बेर मत तोड़ो जैसे सुपरहिट गीत शामिल है.

आशा भोसले ने हिन्दी फिल्मी गीतों के अलावा गैर फिल्मी गाने गजल,भजन और कव्वालियों को भी बखूबी गाया है. उन्होंने हिंदी के अलावा मराठी, बंगाली, गुजराती पंजाबी, तमिल, मलयालम अंग्रेजी भाषा में भी अनेक गीत गाये हैं. जहां एक ओर संगीतकार जयदेव के संगीत निर्देशन में जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा की कविताओं को आशा भोसले ने अपने स्वर से सजाया है वहीं फिराक गोरखपुरी और जिगर मुरादाबादी के रचित कुछ शेर भी गाये है.

हर गाने में बसी मिठास

वर्ष 1957 में संगीतकार ओ.पी. नैय्यर के संगीत निर्देशन में बनी निर्माता-निर्देशक बी.आर.चोपड़ा की फिल्म ..नया दौर.. आशा भोसले के सिने करियर का अहम पड़ाव लेकर आई. वर्ष 1966 में तीसरी मंजिल में आशा भोसले ने आर.डी.बर्मन के संगीत में ..आजा आजा मैं हूं प्यार तेरा..गाना को अपनी आवाज दी, जिससे उन्हें काफी प्रसिद्ध मिली.साठ और सत्तर के दशक में आशा भोसले हिन्दी फिल्मों की प्रख्यात नर्तक अभिनेत्री ..हेलन.. की आवाज समझी जाती थी. आशा भोसले ने हेलन के लिये तीसरी मंजिल में ..ओ हसीना जुल्फों वाली.. कारवां में .. पिया तू अब तो आजा ..मेरे जीवन साथी में.. आओ ना गले लगा लो ना और डॉन में ..ये मेरा दिल प्यार का दीवाना.. गीत गाया.

आशा भोसले बिजनेस में भी सफल

आशा भोसले ने ना केवल सुरों से जादू बिखेरा बल्कि कारोबार की दुनिया में भी सफल रही हैं. उन्होंने दुनियाभर में ह्यद्धड्डह्य% (आशाज) नाम से एक अंतरराष्ट्रीय डाइनिंग ब्रांड शुरू किया है. इसकी शुरुआत साल 2002 में दुबई से हुई थी. आज इसके रेस्तरां दुबई के अलावा कुवैत, बहरीन, अबू धाबी के साथ-साथ ब्रिटेन के बर्मिंघम और मैनचेस्टर जैसे शहरों में भी स्थित हैं. मिडिल ईस्ट और यूके में लगभग 14 आउटलेट संचालित हैं.

आशा भोसले की नेटवर्थ ?

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आशा भोसले की अनुमानित कुल संपत्ति 150 से 200 करोड़ रुपये के बीच है. उनकी कमाई का मुख्य जरिया उनका ऐतिहासिक गायन करियर, रॉयल्टी और दशकों से चले आ रहे हिट एल्बम रहे हैं.

भारत-पाकिस्तान के बीच संगीत का पुल बनीं आशा

आशा भोसले उन चुनिंदा कलाकारों में थीं, जिन्होंने संगीत के जरिए सरहदों को पार किया. भारत और पाकिस्तान के बीच राजनीतिक तनाव के बावजूद, उनकी आवाज दोनों देशों में बराबर पसंद की जाती थी. उनके गाने आज भी पाकिस्तान में उतने ही सुने जाते हैं जितने भारत में. आशा भोसले का संगीत सफर सिर्फ गानों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने देशों के बीच दूरी को कम करने का काम भी किया. उनकी आवाज, उनके एक्सपेरिमेंट और उनका इंटरनेशनल विजन उन्हें एक सच्चा लीजेंड बनाता है. उनके जाने से संगीत जगत को बड़ा नुकसान हुआ है, लेकिन उनकी आवाज हमेशा लोगों के दिलों में जिंदा रहेगी.

बैन के बाद भी नहीं रुका गाना दम मारो दम

जब आशा भोंसले की आवाज़ में गाया गया सुपरहिट गाना दम मारो दम 1971 में रिलीज़ हुई फिल्म हरे रामा हरे कृष्णा में सामने आया, तो इसने सिर्फ मनोरंजन नहीं किया बल्कि पूरे देश में हलचल मचा दी. अभिनेत्री जीनत अमान के हिप्पी और बेपरवाह अंदाज़ के साथ फिल्माया गया यह गाना अपने समय से आगे का प्रतीक बन गया, लेकिन इसी कारण इसे विवादों का सामना भी करना पड़ा. गाने में दिखाए गए खुले जीवन और नशे के संदर्भों को लेकर इसे नशे को बढ़ावा देने वाला बताया गया, जिसके चलते टीवी और रेडियो पर इस पर बैन लगा दिया गया. हालांकि, सिस्टम की इस रोक के बावजूद 'दम मारो दम' का जादू लोगों के दिलों से कभी नहीं मिटा—यह गाना चोरी-छिपे सुना गया, गुनगुनाया गया और धीरे-धीरे एक कल्ट क्लासिक बन गया. आज भी यह गाना बॉलीवुड के सबसे सदाबहार हिट्स में शामिल है, जो साबित करता है कि असली संगीत को रोका नहीं जा सकता.

आशा का दीदी संग सुरों का प्यार

आशा भोसले ने अपने करियर में कई उतार-चढ़ाव देखे, लेकिन सबसे दिलचस्प पहलू रहा उनकी बड़ी बहन लता मंगेशकर के साथ उनकी तुलना और कॉम्पटीशन. अक्सर यह माना जाता था कि दोनों के बीच कड़ी प्रतिद्वंद्विता थी, लेकिन आशा ने खुद इस धारणा को एक अलग नजरिए से पेश किया.

एक इंटरव्यू में आशा भोसले ने बताया कि एक बार किसी म्यूजिक डायरेक्टर ने उन्हें यह समझकर फोन किया कि उन्होंने एक खास गाना गाया है, जबकि वह गाना असल में लता मंगेशकर ने गाया था. उस घटना ने आशा को गहराई से सोचने पर मजबूर कर दिया. उन्होंने तुरंत स्पष्ट किया कि वह आवाज़ उनकी नहीं, बल्कि उनकी दीदी की है. लेकिन उसी पल उन्होंने यह भी महसूस किया कि अगर उन्हें इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनानी है, तो उन्हें कुछ नया और अलग करना होगा.

आशा भोसले ने बताया कि वह अक्सर इंग्लिश फिल्में देखा करती थीं और वहां के म्यूजिक से प्रेरणा लेकर अपने गानों में नए एलिमेंट जोड़ने की कोशिश करती थीं. यही प्रयोगशीलता आगे चलकर उनकी सबसे बड़ी ताकत बन गई. जहां लता मंगेशकर अपनी मधुर और क्लासिकल आवाज़ के लिए जानी जाती थीं, वहीं आशा ने वेस्टर्न, कैबरे और पॉप स्टाइल में भी अपनी पहचान बनाई.

उन्होंने यह भी कहा कि जब भी वह अपनी बहन के साथ रिकॉर्डिंग करती थीं, तो ध्यान से देखती थीं कि लता गाने में किस तरह का ट्विस्ट लाती हैं. इसी से प्रेरित होकर वह भी अपने गानों में कुछ नया जोड़ने की कोशिश करती थीं. यही वजह थी कि दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा होने के बावजूद वह हमेशा सकारात्मक और प्रेरणादायक रही.

हालांकि, दोनों बहनों के रिश्ते को लेकर कई बार अनबन की खबरें भी आईं, खासकर उस समय जब आशा भोसले ने लता के सेक्रेटरी गणपत राव से शादी की थी. कहा जाता है कि इस वजह से कुछ समय के लिए दोनों के रिश्तों में दूरी आ गई थी. लेकिन इसके बावजूद, संगीत के प्रति उनका समर्पण और एक-दूसरे के प्रति सम्मान कभी कम नहीं हुआ.

आज, जब हमारे बीच आशा भोसले नहीं हैं, तब उनकी ये बातें न सिर्फ उनके व्यक्तित्व को उजागर करती हैं, बल्कि यह भी दिखाती हैं कि असली सफलता प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि खुद को लगातार बेहतर बनाने में छिपी होती है.

70s: बागी अंदाज़ और नया स्वैग

70 का दशक हिंदी सिनेमा में प्रयोगों का दौर था और इस दौर की सबसे दमदार आवाज़ बनीं आशा भोसले. संगीतकार आरडी बर्मन के साथ उनकी जोड़ी ने गानों की परिभाषा ही बदल दी. 'दम मारो दम' ने युवाओं की नई सोच और विद्रोही भावना को आवाज़ दी, जबकि 'पिया तू अब तो आजा' और 'महबूबा महबूबा' जैसे गानों ने बोल्डनेस और ग्लैमर का नया ट्रेंड सेट किया.

इन गानों को लेकर विवाद भी हुए—कभी इन्हें अश्लील कहा गया, तो कभी इनके प्रभाव को लेकर चिंता जताई गई—लेकिन यही विवाद उनकी लोकप्रियता का कारण भी बने. इसी दौर में 'चुरा लिया है तुमने जो दिल को' और 'दो लफ़्ज़ों की है दिल की कहानी' जैसे रोमांटिक गीतों ने यह साबित किया कि आशा सिर्फ मॉडर्न या बागी ही नहीं, बल्कि हर तरह की भावनाओं को बखूबी निभाने वाली गायिका हैं.

80s : क्लासिकल में भी कमाल

80 के दशक में आशा भोसले ने अपने करियर का सबसे बड़ा ट्रांसफॉर्मेशन दिखाया. उमराव जान में संगीतकार खय्याम की जटिल और क्लासिकल धुनों पर 'दिल चीज़ क्या है', 'इन आंखों की मस्ती' और 'ये क्या जगह है दोस्तों' जैसे गीत गाकर उन्होंने आलोचकों को भी चौंका दिया.

जो लोग उन्हें सिर्फ चुलबुले और कैबरे गीतों की आवाज़ मानते थे, उनकी सोच पूरी तरह बदल गई. इसके बाद गुलज़ार की फिल्म इजाज़त में 'रोज़ रोज़ आंखों तले' जैसे भावपूर्ण गीतों ने उनकी संजीदा गायकी को नई ऊंचाई दी. इस दशक में मिले नेशनल अवॉर्ड्स ने उन्हें कम्प्लीट सिंगर के रूप में स्थापित कर दिया.

90s : नए दौर में भी टॉप पर

90 के दशक में जब बॉलीवुड में नई आवाज़ों का दौर शुरू हुआ, तब भी आशा भोसले ने अपनी जगह मजबूती से बनाए रखी. एआर रहमान, अनु मलिक और विशाल भारद्वाज जैसे संगीतकारों ने उन्हें नए साउंड और तकनीक के साथ पेश किया. 'रंगीला', 'ताल', 'दौड़' और 'तक्षक' जैसी फिल्मों के गानों में उनकी आवाज़ फिर से युवाओं की पसंद बन गई. इसके साथ ही उनका इंडी-पॉप अवतार भी बेहद सफल रहा—'जानम समझा करो' एलबम ने उन्हें पॉप आइकन बना दिया, जबकि अदनान सामी के साथ 'कभी तो नज़र मिलाओ' ने चार्टबस्टर सफलता हासिल की.

नई सदी : उम्र सिर्फ एक संख्या

नई सदी में भी आशा भोसले का जादू कम नहीं हुआ. 60-70 की उम्र पार करने के बाद भी उन्होंने 'खल्लास', 'शरारा शरारा' और 'लकी लिप्स' जैसे गानों में युवा ऊर्जा को उसी जोश के साथ पेश किया. यह अपने आप में एक मिसाल थी कि कैसे एक कलाकार समय के साथ खुद को ढाल सकता है. 2017 की बेगम जान में 'प्रेम में तोहरे' जैसे गीत और 2019 की सांड की आंख तक उनकी सक्रियता यह दिखाती है कि उनका संगीत से रिश्ता कभी कमजोर नहीं पड़ा. उनका आखिरी फिल्मी गीत लाइफ इज़ गुड में सुनाई दिया.

गाना रिकॉर्ड करने पहुंचीं तो स्टूडियो से निकाला गया

भारतीय सिनेमा की महान गायिका आशा भोसले के शुरुआती करियर में कई कठिन और अपमानजनक अनुभव भी शामिल रहे. ऐसा ही एक किस्सा साल 1947 का है, जब उन्हें अपनी आवाज को लेकर आलोचना झेलनी पड़ी और रिकॉर्डिंग स्टूडियो से बाहर तक निकाल दिया गया.

यह घटना उस समय की है जब आशा भोसले, मशहूर गायक किशोर कुमार के साथ फिल्म जान पहचान के लिए गाना रिकॉर्ड करने पहुंची थीं. इस फिल्म में राज कपूर और नर्गिस मुख्य भूमिका में थे, जबकि संगीत निर्देशन खेमचंद प्रकाश ने किया था.

उस दौर में रिकॉर्डिंग की सुविधाएं बेहद सीमित थीं—स्टूडियो में सिर्फ एक माइक्रोफोन होता था और सभी गायकों को उसी के सामने खड़े होकर गाना पड़ता था. जैसे ही आशा भोसले और किशोर कुमार ने गाना शुरू किया, स्टूडियो में मौजूद रिकॉर्डिस्ट रॉबिन चटर्जी ने धीमे से संगीत निर्देशक से कहा कि इन दोनों की आवाज माइक्रोफोन पर अच्छी नहीं लग रही, इसलिए किसी और गायक को बुलाया जाए.

सितारों ने दी सुरों की मल्लिका आशा भोसले को श्रद्धांजलि

अक्षय कुमार ने शेयर किया पोस्ट

एक्टर अक्षय कुमार ने आशा भोसले के साथ सोशल मीडिया पर एक फोटो शेयर करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी है. उन्होंने लिखा है, 'उनकी सुरीली आवाज हमेशा-हमेशा के लिए अमर रहेगी ओम शांति.'

भाग्यश्री ने शेयर किया पोस्ट

एक्ट्रेस भाग्यश्री ने दिग्गज सिंगर के निधन पर शोक जताते हुए कहा कि उन्होंने संगीत जगत का एक अनमोल हीरा खो दिया है. उन्होंने आशा भोसले की सुरीली और मधुर आवाज को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनकी आत्मा की शांति की कामना की.

करण जौहर ने लिखा इमोशनल नोट

फिल्म मेकर करण जौहर ने सिंगर के निधन पर गहरा शोक जताते हुए कहा कि एक लेजेंड को खो देना सिर्फ शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता. उन्होंने आशा भोसले की आवाज को भारतीय सिनेमा के एक पूरे दौर को परिभाषित करने वाली बतायाै.

हेमा मालिनी ने शेयर किया इमोशनल नोट

आशा ताई अब हमारे बीच नहीं रहीं ! मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि इतनी जीवंत, अपने गीतों में इतनी जान और रंग भरने वाली शख्सियत हमें शोक में छोड़कर चली गईं.

कैलाश खेर ने किया याद

कैलाश खेर ने एबीपी न्यूज संग बातचीत में कहा आशा जी बहुत अच्छी गायिका तो थी ही, लेकिन एक बहुत अच्छी कलीग भी थी. उन्होंने कहा काम से तो इंसान की पहचान होती ही हैं लेकिन व्यक्तित्व का पता तब चलता है जब आप उनके पास होते हैं. वो काफी अच्छी थी.

कमाल की कलाकार थीं आशा

एआर रहमान ने सोशल मीडिया पर श्रद्धांजलि दी है। उन्होंने लिखा है, 'वे अपनी आवाज और आभा के जरिए हमेशा जीवित रहेंगी। क्या कमाल की कलाकार थीं'।